मरीचिका

भाग- 1

मूल मैथिली

लिली रे

हिन्दी अनुवाद

विभा रानी

मरीचिका

(उपन्यास)

मूल मैथिली- **लिली रे**

हिंदी अनुवाद- **विभा रानी**

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2021

© विभा रानी

प्रकाशकीय

अकादमी की प्रकाशन माला में यह पाँचवाँ उपन्यास है। इसमें मिथिला के एक पूर्वाञ्चलीय सामंत-परिवार के पचास साल पहले की गतिविधियों का जीवंत, मार्मिक और विशद चित्रण है। देश, काल और पात्र- तीनों को साकार कर पाठकों के सामने रखना उपन्यास का एक मुख्य धर्म है। इसमें जाहिर है, कुछ ज्यादा पन्नों की जरूरत होती है। लेकिन मोटे उपन्यासों के प्रकाशन और उसकी बिक्री दोनों दुष्कर जानकर मैथिली के लेखकों ने हाल- हाल तक वास्तविक अर्थ में शायद ही उपन्यास लिखा है। मैथिली अकादमी की स्थापना से पहले जो कुछ लिखा गया है, उन्हें उपन्यास नहीं, उपन्यासिका या दीर्घ कथा कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। ऐसी स्थिति में श्रीमती लिली रे ने लगभग एक हजार पृष्ठों का का यह उपन्यास लिख गईं, वह निस्संदेह इनके दृढ़ आत्मविश्वास और साहस का प्रमाण है।

उपन्यास की पांडुलिपि अकादमी को काफी दिन पहले ही मिल गई थी। जिन्होंने भी इसे पढ़ा, मुक्त कंठ से प्रशंसा करते रहे, लेकिन अकादमी इसकी विशाल काया के कारण इसे प्रकाशित करने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। सौभाग्यवश अकादमी धीरे धीरे अपनी पूर्णता को प्राप्त करता गया, जिसके कारण जिसके परिणाम स्वरूप इस उपन्यास का पूर्वार्ध आज आप लोगों के हाथ में है। इसका उत्तरार्ध भी आशा है कि जल्द ही आप लोगों के सामने आएगा।

इस उपन्यास की लेखक श्रीमती लिली रे मैथिली जगत में बहुत दिनों तक अज्ञात जैसी रहीं। लेकिन अब इन्हें कौन नहीं जानता! उच्च कुल, उच्च पद, उच्च जमींदार परिवार, प्राचीन सनातन परंपरा, अधुनातन जीवनधारा, उदारतम आचार विचार, विप्लवी युगधर्म- इन सबके प्रत्यक्ष दर्शन- स्पर्शन से बने एक अनुपम व्यक्तित्व का नाम है लिली रे, जिनकी आंखें अनुवीक्षण और परीक्षण दोनों में समान रूप से समर्थ हैं।

आशा है कि यह उपन्यास केवल विशालता में ही नहीं, बल्कि आंतरिक गुणोत्कर्ष में भी एक कीर्तिमान स्थापित करेगा।

(श्रीकांत ठाकुर)

अध्यक्ष

मैथिली अकादमी

18 मार्च 1981

पटना

1.

देवीघर में राजा साहेब का स्वर गनगना रहा था। नेना सरकार का अक्षरारंभ था। राजा साहेब ने घड़ी देखी। राजमाता साहेब अपने पुत्र और पौत्र को एकटक देख रही थीं। अन्य लोग राजमाता साहेब को देख रहे थे- लंबी, छरहरी देह। इस उम्र में भी एकदम सीधी तनी देह। गौर वर्ण गौरव से दिप दिप कर रहा था। चेहरे पर उम्र की एक भी रेखा नहीं थीं।

राजा साहेब अपने जन्म से पहले ही पितृहीन हो गए थे। राजमाता साहेब ने अकेले हाथों राज्य का विस्तार किया। सूर्यपुर स्टेट का नाम आज कौन नहीं जानता है? हालांकि राजमाता साहेब अब सारा भार अपने बेटे को सौंप चुकी हैं और कहती रहती हैं कि अब उन्हें इन सबसे कोई मतलब नहीं। लेकिन कौन नहीं जानता है कि गढ़ी के एक कोने से दूसरे कोने तक कहां क्या हो रहा है, इसकी सारी खबर राजमाता साहेब को रहती है। राजा साहेब कोई भी फैसला लेने से पहले एक बार अपनी मां से जरूर पूछते हैं। राजमाता साहेब का आदेश टालने की ताकत किसी में नहीं है। राजा साहेब तक में भी नहीं। दुबली पतली काया, श्वेत वस्त्र, अल्पभाषिणी राजमाता साहेब में कितनी शक्ति छुपी रहती है? लोगों की नजरें अपने आप राजमाता साहेब पर टिक जातीं। सभी के चेहरों पर आदर- भय मिश्रित चकित भाव रहते!